per cent. In the current year *i.e.* 2009-10, with weak monsoon and other related factors, the production of sugar is expected to go down sharply. So, we are very much concerned about the rising prices of sugar and shortage of sugar in the country. Of course, we have seen the newspaper reports that in order to tide over shortage of sugar and curb the rising prices of sugar, the Government is planning to import sugar. The Union Cabinet has already taken a decision to import two million tonnes of sugar. The world prices of sugar are also very high. Even after importing sugar, the prices of sugar are not going to come down. Then, what is the alternative before the Government? We must know as to why this problem has arisen. The main reason for shortage of sugar is this. In the last one-and-a-half years, the farmers who were producing sugarcane have diverted to various other crops like wheat in Uttar Pradesh. In the States of Andhra Pradesh and Maharashtra, the sugarcane farmers have diverted to paddy and other crops. The other reasons for shortage of sugar are like shortage of labour, shortage of fertilizer and lack of coordination between sugar factory owners and sugarcane growers. Then, how can this problem be solved? The first and the foremost step in this direction would be that we must increase production of sugarcane in States like Uttar Pradesh, Maharashtra, Andhra Pradesh, Karnataka and Tamil Nadu. How should we do it? The Government should take such steps which would encourage farmers to produce more sugarcane. No doubt, recently, the Cabinet has increased the prices of sugarcane to some extent. But, this mere increase in the prices of sugarcane is not sufficient. First of all, we must solve the problems of sugarcane farmers and try to find out as to why they have diverted to other crops and why not they again come back to sugarcane production. We must know about the problems being faced by them. They are facing the problem of shortage of fertilisers. The Government should import these things without any duty. We should introduce harvesting mechanism and also import harvesting equipment which will assure the farmers that in case of shortage of labour they would be able to produce sugarcane with the new harvesting equipment. So, various new methods should be introduced in this area. Sir, a lot of sugar factories have been closed down in Uttar Pradesh, Andhra Pradesh and Maharashtra because there is not enough production of sugarcane in these States. As a result, there is shortage of sugar in the country. We should ensure that these factories are not closed down at any cost. If the sugar factories are closed down due to lack of sugarcane production, then, we will have shortage of sugar in the country and the prices of sugar will be very high.

Therefore, the Government should concentrate and come out with...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The mike went off, please sit down.

Poor condition of government hospitals in Uttar Pradesh

श्री कलराज मिश्र (उत्तर प्रदेश) : उपसभापति जी, उत्तर प्रदेश में सरकारी अस्पतालों में जिस तरीके से मरीज़ों की हालत पैदा हो गई है, या तो दवा और चिकित्सक के अभाव में वे दम तोड़ रहे हैं या वे अस्पताल से भागकर बाहर जा रहे हैं। वहां जूनियर डॉक्टर्स की तरफ से हड़ताल की गई है और हड़ताल इसलिए की गई है

कि छठे वेतन आयोग की रिपोर्ट के आधार पर जो वेतन उनको प्राप्त होना चाहिए था, वह उनको नहीं प्राप्त हो रहा है। एक तरफ तो लखनऊ चिकित्सा विश्वविद्यालय में वहां के डॉक्टर्स को वह वेतन दिया जा रहा है, लेकिन बाकी के मेडिकल कॉलेज चाहे गोरखपुर मेडिकल कॉलेज हो, चाहे आगरा मेडिकल कॉलेज हो, चाहे कानपुर मेडिकल कॉलेज हो, वहां के डॉक्टर्स को नया वेतन नहीं दिया जा रहा है, जिसका परिणाम यह हुआ है कि वहां के सभी डॉक्टर्स ने हड़ताल पर जाने का फैसला किया और हड़ताल पर चले गए हैं। मरीज़ भाग रहे हैं, कुछ मरीज़ मर गए हैं। इमरजेंसी में गए, दवा नहीं हुई। चाहे कानपुर के मेडिकल कॉलेज में गए, उनकी मृत्यु हो गई, गोरखपुर मेडिकल कॉलेज में तीन लोगों की मृत्यु हुई। इमरजेंसी में गए, उनको कोई देखने वाला नहीं रहा, संत कबीरनगर अस्पताल में गए, कोई देखने वाला नहीं रहा, वहां उनकी मृत्यु हो गई। इसी प्रकार आगरा में ...तो एक-एक अस्पताल के बारे में जानकारी प्राप्त करने पर यह पता चला है कि वहां जो मरीज़ जा रहा है, कोई उसको देखने वाला नहीं है। हालत बद से बदतर होती जा रही है और वहां के शासन के कान पर कोई जूं नहीं रेंग रही है। संवेदनशून्यता इतनी अधिक बढ़ गई है कि आम मरीज़ यह अनुभव करने लगा है कि हम कहां जाएं? गरीब मरीज़ चिकित्सा न प्राप्त होने के कारण त्रस्त हो रहा है और जब बाहर आ रहा है, घर पर भी, तो ठीक से दवा न मिल पाने के कारण उसकी दुर्दशा हो रही है। तो ऐसी हालत में जबकि हालत बद से बदतर होती जा रही है, केंद्र सरकार को इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है, हस्तक्षेप करने की आवश्यकता है और राज्य सरकार के द्वारा जो विभेदकारी व्यवहार डॉक्टर्स के प्रति अपनाया जा रहा है, उसको भी समाप्त करने की जरूरत है। लखनऊ चिकित्सा विश्वविद्यालय के जूनियर डॉक्टर्स को जो वेतन प्राप्त हो रहा है, बाकी के लोगों को भी वह प्राप्त हो, यह व्यवस्था करने की भी जरूरत है और अगर पैसे की कमी है, तो मैं तो आग्रह करूंगा कि अभी यहां के स्वास्थ्य मंत्री महोदय ने स्वयं कहा कि मोबाइल वैन वगैरह को अभी राज्य सरकार मांग नहीं रही है, इसलिए हम नहीं दे पा रहे हैं। मैं तो कहता हूं कि इसमें बढ़कर हस्तक्षेप करते हुए जो भी कमी हो, उसको पूरा करने का यहां के लोग प्रयत्न करें, तो वह ज्यादा अच्छा होगा। वहां तत्काल जूनियर डॉक्टर्स की हड़ताल समाप्त होनी ही चाहिए, किसी भी तरीके से हस्तक्षेप करके करें, तो ज्यादा अच्छा होगा।

श्री बलबीर पुंज (उड़ीसा) **:** सर, मैं इससे स्वयं को एसोसिएट करता हूं।

प्रो. राम गोपाल यादव (उत्तर प्रदेश) **:** सर, मैं भी इस विषय के साथ स्वयं को सम्बद्ध करता हूं।

श्री नन्द किशोर यादव (उत्तर प्रदेश) **:** सर, मैं भी अपने आप को इससे एसोसिएट करता हूं।

श्री उपसभापति : ठीक है, सभी एसोसिएट करते हैं।

Plight of Sikh refugees in Pakistan

सरदार तरलोचन सिंह (हरियाणा) : चेयरमैन साहब, पिछले सैशन में मैंने यह मसला उठाया था, जो आज मैं दोबारा उठा रहा हूं। श्री अहलुवालिया और श्री करीमपुरी, दोनों ने मेरे साथ खड़े होकर आवाज़ उठाई थी, मगर आज बड़े दुख के साथ मैं दोबारा यह कह रहा हूं कि कल मैंने पार्लियामेंट में इसी issue पर एक unstarred question पूछा था और जो जवाब मुझे Ministry of External Affair से मिला है, उसको पढ़कर ऐसा लगता है कि हमारी जो Ministry of External Affairs है, उसका attitude towards Sikh refugees क्या है ! पाकिस्तान में पहले जज़िया उन सिख लोगों से लिया गया और जब जज़िए की खबर आई, तो करीब दो-तीन हज़ार लोगों को दो करोड़ रुपए जज़िया देना पड़ा और उसके बाद उनके घर जला दिए गए और वे जाकर पंजा साहब गुरुद्वारे में रहे। जब Ministry of External Affairs से मैंने यह सवाल पूछा, तो जवाब यह मिला है कि हमने अखबारों में पढ़ा है कि दो हज़ार सिख वहां से निकाले गए और गुरुद्वारे में रह रहे हैं। मैंने पूछा कि क्या भारत सरकार का खुद कोई अफसर या MEA का कोई कर्मचारी वहां गया? तो जवाब मिला -